

Name - Hrushikesh
Dandekar
Group - A

Topic - निर्मितीची काळजी घ्या

प्रत्येक वर्षी ५ जूनला जागतिक पर्यावरण दिवस साजरा केला जातो. पर्यावरणाचे रक्षण आणि पर्यावरणाबाबत (WORLD ENVIRONMENT DAY) नागरिकांमध्ये जनजागृती करणे हा या दिवसाचा मुख्य उद्देश असतो. पर्यावरण आणि मानवी आरुढ्याचा एकमेकांशी घेत संबंध येतो. यामुळे पर्यावरणाचा हानी होईल असे कोणतेही कृत्य करू नये कारण वातावरण दूषित झाल्यास त्याचे घेत दुष्परिणाम आपल्या जीवनावर होण्याची शक्यता असते. प्रदूषण हे आपल्या आरुढ्याला हळूहळू पसरणारे एक विषय आहे. जे हवा, पाण्याच्या माध्यमातून आपल्या शरीराला प्रवेश करतात आणि या मुळे आपल्याला गंभीर आजारांची लागण होऊ शकते. पर्यावरणाचा अहारास हात असल्यास कित्येक प्राणी, पक्षी, जीव जंतू आणि वन्यजीव नामशेष झाले आहेत. दुष्काळ, पूर, भूकंप इत्यादी नैसर्गिक आपत्तींच्या संकटामुळे शहराचे शहर उद्ध्वस्त होत आहेत. या संकटापासून बचाव करण्यासाठी पर्यावरणाचे (WORLD ENVIRONMENT DAY 2020) रक्षण करणे गरजेचे आहे. यासाठी आधी स्वतः स्वताःपासून सुरुवात करावी स्वतःच्या काही वाईट सवई सांडून पर्यावरण वाचवण्यामध्ये योगदान द्या. गावाकडे जाऊन उरलेले जेवण, शिळे, फळ-भाज्यांच्या साली इत्यादी गाडी जनावरांना खाण्यासाठी

दिल्या जाताना. आल्या आणि सुका कचरा एकत्र होणार नाही याची काळजी घेतली जाते.

पण शहरी भागात मात्र आल्या आणि सुका कचरा वेगवेगळे करण्याकडे दुर्लक्ष केला जात आहे. आपल्याला तसेच इतरांना त्रास होऊ नये, म्हणून आल्या आणि सुका कचरा ठेवण्याची सवय त्याबुन द्यावी.

आल्या कचऱ्यापासुन आपण खताची निर्मिती करू शकतो. या खताचा वापर आपण झाडांसाठी करू शकतो. उदाहरणार्थ पेंपर, बॉटल इत्यादी चहापावडर, अंड्याचे कवच स्वच्छ धुवुन लुम्ही या पासुन खत तयार करू शकतो.

बाजारातुन खत विकत आण्यापेक्षा घरगुती खताची निर्मिती करा. तर सुक्या कचऱ्यातील बऱ्याच्या बस वस्तुचा पुनर्वापर केला जाऊ शकतो. उदाहरणार्थ पेंपर, बॉटल इत्यादी सुप पुन्हावापरून याठ्य नसेल तर त्याचे याठ्य पदार्थाने नष्ट करावी. आजही कितीक जन प्लास्टिकच्या पिशव्या वापरण्यात दुर्लक्ष करत आहे. वळीच ही सर्वई बंद करा समजा तुम्हाला एकाडे उन्नपदार्थ एका प्लास्टिकच्या आड्यातुन पासल करुण मिळाल्यास त्यामध्ये छोटसे शोपटे त्यावावे.

प्लास्टिक स्ट्रॉ एवजी पेंपर स्ट्रॉचा वापर करावा. दुधाची पिशवी पुर्णपणे फाडुनच फेकावी. ही पिशवी पुर्ण न फाडल्यास त्याचे रिसायकल प्रक्रियेत अडथळे येऊ शकतात.

पण शक्य ना आपल्या दैनंदिन आयुष्यात प्लास्टिकच्या प्लास्टिकचा वापर करत टाळा प्लास्टिक पर्यावरण तसेच आरोग्यासाठी हानीकारक आहे.

Hrushikesh
30/8/24

30/8/2024

Name - Harshika Rajnarayan Yadav. Group - A

Topic - 'पर्यावरण'

"घरा को छोड़े पेड़-पौधों से सजाएँ

पर्यावरण को सुरक्षित बनाएँ।"

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, परि और आवरण जिसमें परि का मतलब हमारे है हमारे आसपास यह कह ले कि जो हमारे चारों ओर है वही आवरण का मतलब है जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है।

पर्यावरण जलवायु, स्वच्छता, प्रदूषण सभी को मि मिलाकर बनाता है और ये सभी चीजें यानि पर्यावरण हमारे दैनिक जीवन से सीधा संबंध रखता है।

धरती पर जीवन के लालन पालन के लिए पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। पानी हवा पेड़ इत्यादि पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। पर्यावरण से हमें सस्य संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं जो किसी सजीव प्राणी को जीने के लिए अवश्यक है। हम हमेशा से पर्यावरण के संसाधनों का अप्रूपर इस्तेमाल किया है।

पर्यावरण के सभाव में जीवन कि कल्पन भी नहीं कि जा सस्य सकती है। हमें सविष्य में जीवन को बचाएँ रखने के लिए पर्यावरण कि सुरक्षाक सुनिश्चित करना हो ग होगा। पर्यावरण दिवस प्रत्येक बर्ष वर्ष पूजल को मनाया जाता है।

सुझाव :- आज में इस निबंध से ये सुझाव देना चाहति हू कि वर्तमान समय पर पर्यावरण सुरक्षित कैसे बनाएँ। आईए आइए जानते है।

- 1) स घरों से निकल निकलने वाले को दूषित जल को साफ करने के लिए बड़े- बड़े प्लांट लगाने चाहिए।
- 2) फैक्टरियों और कारखानों को नदी नदि नदीयों से दूर कर देना चाहिए।
- 3) वन संरक्षण को अधिक प्रथमिकता देनी चाहिए।

बचले (शुकीस) जाइ जहाँ कि,
सुंदर सा एक दृश्य बच बचाये ।
संदेश से हम फैलाए ,
आजो पर्यावरण बचाएँ ।

END

~~Harshika~~
20/05/2024

सृष्टि की देखभाल

पर्यावरण दो शब्दों से बना है। परि और आवरण इसका अर्थ होता है हमारे चारों ओर का वातावरण। इसमें जैविक और अजैविक घटक आते हैं। जैसे हवा, पानी, जिव-जन्तु, पेड़-पौधे, मिट्टी नदियाँ आदि शामिल हैं।

पर्यावरण की देखभाल

पहले हम यह जान ले कि हमलोग पर्यावरण का नुकसान कैसे कर रहे हैं:

1. लगातार बढ़ते वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण के कारण पर्यावरण बुरी तरह से प्रभावित होता है।
2. लोग मकानों और कारखानों के लिए पेड़ों को काट रहे हैं।
3. नदियों में कुड़ा-कचरा डाल रहे हैं।

४. पर्यावरण की देखभाल हमें अपनी पूरी लगन और (महत्त्व) से करनी चाहिए।

५. अधिक से अधिक पेड़ों को लगाये। इसलिये हम वायु प्रदूषण को रोकने के लिये ज्यादा से ज्यादा पेड़ों को लगाये। जल प्रदूषण रोकने के लिए गंदे साबुन पाठ पानी को खुले में नहीं छोड़ना चाहिए। ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए गाड़ियों के हॉर्न नहीं बजाने चाहिए। पर्यावरण को बचाने के लिए पहले हमें प्रदूषण को कम करना चाहिए। यह सब बातें हमें खुद समझनी चाहिए और दूसरों को समझानी चाहिए।

निजी वाहनों का प्रयोग कम करे। बेकार की वस्तुओं को यहाँ-वहाँ ना फेंके, बल्कि कूड़ेदान में डाल ले।

भगवान ने हमें बहुत खुबसूरत धरती दी है हमें उसका ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि हम सब धरती के रहीवासी और हमें उसका ध्यान रखना चाहिए। नहीं तो उसका नुकसान हो सकता है।

परावरण को प्रदूषित करके, भला कैसे कोई बच पाएगा, मनुष्य मनुष्य जीवन तभी रहेगा, जब हर कोई जिम्मेदारी निभाएगा।

~~Handwritten signature~~
30/08/2024

Name- Aarav Amit Prasad
Group - A

Topic - "Peace"

Peace, like the soft whispers of a breeze through a meadow, is the gentle symphony that allows life to flourish. It is not merely the absence of conflict but the presence of harmony, understanding, and love. In a world often marred by chaos and discord, peace stands as a beacon of hope, a reminder of what we, as human beings, can achieve when we choose compassion over conflict and empathy over enmity.

Peace begins within us. It is born in the quiet corners of our hearts, in the moments when we choose to let go of anger and embrace forgiveness. It is in the silent pauses between our thoughts, where understanding takes root and flourishes into kindness. When we cultivate peace within ourselves, it radiates outward, touching every aspect of our lives and the lives of those around us. The world in, turn, becomes a reflection of our inner state, and as more people nurture peace within, the collective consciousness of humanity begins to shift toward a more harmonious existence.

Peace is also found in our relationships, in the way we treat each other with respect and dignity. It is in the smiles we share, the hands we hold, and the words we choose to speak. In a world where words can often wound, peace encourages us to speak with

gentleness and care, to build bridges rather than walls. It teaches us that our differences are not obstacles but opportunities to learn, grow and connect on a deeper level. Through peace, we discover the strength in unity, the beauty in diversity, and the power of love to transcend all barriers.

Moreover, peace extends beyond the human realm, reaching into the natural world that cradles us all. It is in the stillness of a forest, the rhythmic crashing of waves against the shore, and the delicate dance of butterflies in a garden. Nature, in its infinite wisdom, embodies peace in every leaf, every drop of rain, and every ray of sunlight. It reminds us of the delicate balance that sustains life on this planet, and our responsibility, to protect and preserve this fragile harmony.

Let us, then, embrace peace in all its forms. Let it be the foundation upon which we build our lives, our communities, and our world. For in peace, we find the true absence of war, and the presence of everything beautiful and good. Peace is our greatest gift, our greatest responsibility, and our greatest hope. It is the gentle symphony that makes life worth living, and it is within our power to create it, cherish it, and let it flourish in our hearts, and in our world.

Date
30/8/24

Name: Arnav Revnath Mhatre

Std: VII

Div: C

Group: B

Language: Hindi

शांति

अंधकार अंधकार को दूर नहीं कर सकता;
केवल प्रकाश ही ऐसा कर सकता है।
नफरत नफरत को दूर नहीं कर सकती;
केवल शांति ही ऐसा कर सकती है।

शांति एक ऐसा मार्ग है जिस पर चल कर हम अपने समाज में विकास और समृद्धि ला सकते हैं। यदि हमारे पास शांति नहीं है तो, राजनितिक स्थिरता, आर्थिक ताकत, आर्थिक स्थिरता और सांस्कृतिक विकास हासिल करने करना असंभव होगा।

शांति के महत्त्व को समझना तब आसान होगा जब हम संघर्ष के परिणामों पर विचार करते हैं। संघर्ष युद्धों और संघर्षों के कारण अनगिनत लोगों की जान चली जाती है तथा परिवार और समुदाय शोकग्रस्त हो जाते हैं। संघर्ष घरों, बुनियादी ढाँचे और अर्थव्यवस्थाओं को नष्ट कर देता, जिसमें समुदायों के लिए उबरना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। संघर्षों के कारण अक्सर शरणार्थी पैदा होते हैं, जिन्हें सुरक्षा और आश्रय की तलाश में अपने घरों से भागना पड़ता है।

शांति की शिक्षा सभी धार्मिक ग्रंथ और अनुष्ठान भी देते हैं। शांतिपूर्ण वातावरण से कम तनाव और चिंता के कारण मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। शांति से बेहतर शारीरिक शारीरिक स्वास्थ्य मिलता है। शांतिपूर्ण शिक्षा में व्यक्तिगत विकास होता है। शांतिपूर्ण घरों में बच्चे सुरक्षित और प्यार महसूस करते हैं। वैश्विक स्तर पर शांतिपूर्ण देश सहयोग कर सकते हैं, व्यापार कर सकते हैं।

शांति समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शांतिपूर्ण राष्ट्रों में स्थिर अर्थव्यवस्थाएँ होती हैं। जब संघर्ष कम होता है, तब व्यवसाय फल फूल जाते हैं, जिससे नौकरियाँ और समृद्धि पैदा होती है। राजनितिक स्थिरता के लिए शांति आवश्यक है। जब हिंसा कम होगी तब तब लोग बिना किसी डर के लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग ले सकेंगे।

सकेंगे। शांतिपूर्ण समाज में लोग हिंसा या अपराध के बिना अपना दैनिक जीवन जी सकते हैं।

शांति अपने आप नहीं, इसके लिए आती, इसके लिए समर्पित व्यक्तियों और संघटनों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर स्वर्गीय नेल्सन मंडेला एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठित शांति निमाता थे, जिन्होंने रंगभेद को समाज से दूर करने के लिए अथक प्रयास किया। संयुक्त राष्ट्र एक है - ऐसा संघटन जो नई दुनिया भर में शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देता देता है।

शांति केवल विश्व नेताओं संघटनों संघटनों के लिए नहीं है, हर कोई शांति में योगदान दे सकता है। शांति के महत्त्व महत्त्व के बारे में स्वयंको और दूसरों को शिक्षित करना यह पहला कदम है। दूसरों के प्रति सहानुभूति करने से शांति प्रस्थापित हो सकती है।

शांति केवल एक सपना नहीं है, यह एक पक्का एक प्राप्त करने योग्य लक्ष्य है, जो सभी को लाभ पहुंचाता है। आइए हम सब मिलकर एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए काम करें जहाँ शांति कायम हो। जहाँ समझ और सहयोग हमें एक उज्वल और सामंजस्यपूर्ण सामंजस्यपूर्ण भविष्य की ओर ले जायें।

शांति एक दैनिक, एक साप्ताहिक, एक मासिक एक मासिक प्रक्रिया है।

धीरे - धीरे राय बदलती है,

धीरे - धीरे पुरानी बाधाओं को मिटाती है,

युद्ध युपचार युपचार नई संरचनाओं का निर्माण
निर्माण करती करती है।

Handwritten signature and date:
30/08/2024 ✓✓ good

30/8/24

पर्यावरणाची काळजी

सृष्टी मातेची करूया पूजा,
निसर्गाची करूया भाजिरी आराधना,
झाडांना देऊ जीवनदायिनी माया,
धरतीचा करूया संजीवन मदीमा.

भारतीय संस्कृतीत सृष्टी आणि पर्यावरणाचं महत्त्व अजादी काळापासून मान्य करण्यात आलं आहे. प्राचीन ऋषी मुनींनी निसर्गाला देवतेसमान त्याची पूजा केली आहे. 'वृक्षवल्ली आम्हा सोयरे वनचरे' या संत तुकारामांच्या वचनातून आपल्याला निसर्गाप्रती असलेला आदर आणि प्रेम दिसून येते.

भारतातील विविध सण, परंपरा आणि रूढी या पर्यावरण संरक्षणाशी निगडित आहेत. उदाहरणार्थ वटसावित्रीच्या व्रतामध्ये वडाच्या झाडाची पूजा केली जाते तर गोवर्धन पूजा, आंब्याच्या डहाळ्यांचा 'गुढीपाडवा', 'अश्वत्थ' वृक्षाची पूजा अशा अनेक परंपरांमुळे निसर्गाशी आपली नाळ कायम टिकून राहते.

परंतु आजच्या आधुनिक युगात, औद्योगिकीकरण आणि शहरीकरणामुळे पर्यावरणावर गंभीर परिणाम होत आहेत. जंगलतोड, जलप्रदूषण, वायुप्रदूषण आणि हवामानबदल यांसारख्या समस्यांमुळे पृथ्वीचे आरोग्य होक्यात झाले आहे. पर्यावरणाचे संरक्षण करण्यासाठी आपल्या आधुनिक विज्ञानाचा उपयोग करून, पर्यावरणपूरक तंत्रज्ञानाचा अर्थ अवलंबून करायला हवा.

भारतीय विचारसरणीनुसार 'वसुधैव कुटुंबक', म्हणजेच संपूर्ण पृथ्वी माझे कुटुंब आहे. म्हणूनच पृथ्वीच्या हातकांची काळजी घेणे हे आपले आद्य कर्तव्य आहे. आजच्या काळातही माहात्मा गांधीने सांगितलेल्या 'साद्येपणाने जगा व इतरांना ही जगू द्या' या तत्वाचे पालन करणं महत्वाचे आहे.

सूक्ष्मीची निगा राखणं, प्रदूषण कमी करणं, पुर्नवापर आणि पुर्नचक्रीकरण या गोष्टींना आपल्या दैनंदिन जीवनात स्थान देणं गरजेच आहे. वृक्षारोपण, पाणी वाचवा अभियान आणि स्वच्छता मोहिमा या गोष्टींमध्ये प्रत्येकाने आपला सहभाग नोंदवला पाहिजे.

आता आपल्या पर्यावरण संरक्षणाच्या दिशेने वेळ आला आहे की आपण पर्यावरण संरक्षणाच्या दिशेने ठोस पावलं उचलावीत. आपल्या आगामी पिढ्यांना एक सुंदर, स्वच्छ आणि सुरक्षित पर्यावरण देणे हे आपले कर्तव्य आहे. पर्यावरणाशी सुसंगत जीवनशैली अवलंबून आपण ज्ञान या हत्येयाकडे एक पाऊल पुढे टाकू शकतो.

म्हणूनच आपण लक्षात घ्यावे की
‘वृक्ष आहेत पर्यावरणाचे आभूषण,
 त्यांच्यामुळेच कमी होते प्रदूषण.’

(Signature)
 30/6/24

30/8/21

Group - B

Arya Bhoshan Patkar 7-A
Holy Family Convent High School & Junior
College

निबंध लेखन (मराठी)

सृष्टी ची काळजी
पर्यावरण

०० वृक्षवल्ली अम्हा सीयरे,
वनचरे ह०

आपले पर्यावरण आपल्यासाठी रूप महत्वाचे आहे. हे माणसाला कधी कळलेच नाही. आणि ते कधी कळेल ते देखिल माहित नाही. माणूस झाडांना कापतो आणि त्यांच्या जागेवर मोठ्या इमारती बांधतो पण त्या इमारतीत रहायला माणस हॉकी, आणि माणसाला श्वास घ्यायला फक्त हवा पुरेशी नसते. ऑक्सिजन देखिल तितकच महत्वाचे असते. आणि ऑक्सिजन बनवायला अजून तरे कुठली झाडे स यंत्र बनवली नाही आहेत. त्याला झाडेच लागतात. पण जर झाडे उरलेच नाहीत तर ऑक्सिजन कुठून मिळणार. ऑक्सिजन शिवाय कुठलाही जिवंत प्राणी जगू शकत नाही.

आता काही सीजेक झाडे उरली आहेत, त्यामुळे थोडे तरे प्रदूषण कमी होते. माणूस बाहेरच खान खातो, मग त्याच रंपर तिकडेच टाकतो. त्या कचऱ्याच्या धाण वाळामुळे हवा प्रदूषित होते, किती कचऱ्या पेट्या लावल्या, पण त्यांचा काही उपयोग नाही. कारण तिशपर्यंत जायचे कष्टच माणूस घेतच नाही.

आपण प्लॅस्टिकच्या पिशव्यांचा वापर करतो, आणि त्या खरब झाल्यावर त्यांना कचरा पेटित टाकतो. मग गड-मं गडशी त्या कचऱ्यात खान शोधायला येतात. आणि खाण्यासोबत त्यांच्या

पोहात प्लॅस्टिक जातू खूप पोटे कुयल्यामुळे, त्यांचा जीव जाता. माणूस मोठ-मोठे मोबाइलचे टावर बांधता, पक्षी उडताना त्याला आपटतात, त्यांचा जीव जाता. जर असेच होत राहिल तर एकू किंसा असा रेडिओ की आफत्याला पक्षी आणि जनावर कुठे दिसणारच नव्हित.

वाहनांमुळे प्रदुषण होत, मग माणूस आजारी पडतो, त्यामुळे झड देखील मरतात. आधीच्या काळी माणूस २०-२५ वर्षे जगायचा. पण आता ८० वर्षे जर जगला तर देवाची कृपाच समजायची.

हे सगळ आपण थांबवला पाहिजे जर हे थांबल नाही तर आपलू जगण कठीण होऊ शकत म्हणूनच आपण झड कापणे बंद केल पाहिजे, कचरा कचरा पेटित टाकू पाहिजे, प्लॅस्टिकचा वापर कमी केला पाहिजे. हा सगळा बदल तेव्हाच होईल जेव्हा माणसाला कळेल की फक्त माणूस पृथ्वीवर राहून चालणार नव्हि, त्याला खायला-प्यायला झड आणि जनावर देखील तितकेच महत्वाची असतात.

म्हणूनच तर म्हणतात

झड लावा
झड जगा

Bonsalve,
30/3/24

30-8-24

Date: | | | | |
Page: | | | | | ✓

Name - Sibah Asif Ali Golewale
Std - VII Group :- B
Language - English

"Cherishing our Earth" - A call to care of creation.

The world is a masterpiece of creation, with every element of nature intricately designed to play a vital role in the balance of life. This beautiful creation is more than just a source of wonder; it is a sacred trust given to us by God, and caring for it is a responsibility we must take seriously.

The environment is under serious threat from human actions. Deforestation damages the ecosystem and fuels climate change. Pollution harms air, water, and soil, while plastic and waste endangers the wildlife and our health.

To address these challenges, the Indian government launched Swachh Bharat Abhiyan to improve sanitation and waste management. This initiative has raised environmental awareness and encourage citizens to work towards a cleaner, more sustainable future.

As students, we play a vital role in caring for environment. Our actions like, reducing waste, recycling, conserving water, and using energy wisely, help protect the planet. We should also encourage others in our school and communities to support environmental protection.

Caring for the environment help nature protection and promotes peace and justice. Environment damages leads to conflicts, displacement, and poverty, so by protecting supporting it, we contribute to a more peaceful and fair world.

In conclusion, caring for creation is a responsibility we cannot ignore. By addressing environmental challenges like, deforestation, pollution, and plastic waste, and supporting initiatives like Swachh Bharat Abhiyan, we make a more significant impact. Let us commit ourselves to this cause, for in caring for creation, we are caring for our future.

Groupc

Name: Ananya Sagar Dabholkar

Std: IX

~~निर्मिती~~

निर्मिती पर्यावरणाची काळजी घ्या!

हिवा शालू नेसून नटली,
अवनी, धरती, वसुंधरा.
सौंदर्य तिचे अस्मादीन ठेवण्या
पर्यावरण रक्षणाची काळ घ्या.

अद्यापत आरवण महिन्याचा शाटमाठ चालू आहे आणि धरणी हिवा शालू नेसून नटली आहे. पण ही पृथ्वी, पृथ्वीवरील पर्यावरण खरोखरच सुरक्षित आहे का? निश्चिती माणसाला अनेक अडथळे दिले आहे आणि माणसाने देखील या सर्वांचा तापक आपल्या प्रगतीसाठी व सुखसमाधानासाठी पुढेपुढे केला आहे. किंबहुना माणसाने निश्चितीपासून जे-जे मिळवले आहे ते केवळ औद्योगिक प्रयत्न केला आहे. यामुळे पर्यावरण ह्युक्यात असल्याचे दिसून येते. माणसाने आशा सजीवसृष्टीचा विचार करून पर्यावरणाचे संवर्धन व जतन करण्याची आवश्यकता आहे.

जे-जे मीफत मिळते, त्याची माणसाला किंमत कळत नाही. त्याचा चरमही तबिमाप वापर करणे किंवा त्याच्या करण्याच्या वृत्तीमुळे सजीवांच्या आतत्याने माणसाच्या अस्तित्वाचा प्रश्न निर्माण झाला आहे. माणसाने हवा मीफत मिळते म्हणून तिच्या अद्भुत शक्तीकडे दुर्लक्ष केले आहे. ह्याडे तीडली, काळखान्यातून प्रमाणापेक्षा जास्त प्रमाणात विषारी वायू सोडले, ह्याडे तीडल्यानंतर नवीन ह्याडे लावली नाहीत. ह्याडे म्हणजे पर्यावरणातील एक अतिशय महत्त्वाचा घटक आहेत. जे कार्बनडाथ ह्यांक ओक्साइड घेतात आणि ओक्सेजन तहरे सोडतात. माणसाने ह्याडे तीडून कार्बनडाथ ओक्साइड चे प्रमाण तब वाढवले आहे. पण त्याचबरोबर आ पर्यावरणातील ओक्सेजन चे प्रमाण देखील कमी केले आहे. आपल्याला घेघोआराम मिळाता म्हणून माणसाने निश्चितीची न अडून

निघणारी हानी केली आहे:

जलप्रदूषण ही पर्यावरण जन्म जन्म करण्यामधील दुसरी एक मोठी समस्या आहे. पाण्याचा अयोग्य वापर, स्थायनमिश्रित किंवा सांडपाण्यामुळे होणारे पिण्यायोग्य पाण्याचे होणारे प्रदूषण, नाल्याचे स्तरूप ल्या सर्व कारणांमुळे जलसंपत्तीचे व जलचराचे अतोनात नुकसान होत आहे. जलप्रदूषणामुळे मानवाला देखील अवास्थ्य संबंधित समस्यांना किंवा आजारांना सामोरे जावे लागत आहे. आणि पिण्याच्या पाण्याची टंचाई निर्माण होण्यास मदतीने आपण झाले आली आहे.

मित्रांनी, गेल्या महिन्यात आपण केवळ महील, वायनाय येथील श्रुश्रुलनाची बातमी असत वाचत होती. त्या श्रुश्रुलनात शिकडी लोक सध्यामुखी पडले होते. तर काही लोक जखमी झाले होते. हा निस्सर्गने दिलेला एक संकेत आहे व मानवाने जागे ठीकून पर्यावरणाचे रक्षण कऱ्याची गरज आहे. आजकाल पंचतारांकित पर्यटन करण्याचे प्रमाण वाढले आहे. माणसाने झालेला हाडे तोडून मोठमोठ्या इमारती उभारल्या आहेत. व अश्या या अनियोजित बांधकामामुळे ही पृथ्वी, पृथ्वीवरील पर्यावरण ह्योक्यात आहे. व पर्यावरण सुवर्द्धित शुद्धित ठेवण्यासाठी माणसाने पुढील उपाययोजना केल्या पाहिजेत.

१) झाडे लावणे - झाडांमुळेच आपल्याला जगण्यासाठी ऑक्सिजन प्राप्त होतो. त्यामुळे झाडे लावा व झाडे जगवा. दरवर्षी एक झाड शिकडी लोकांना ऑक्सिजन देते. त्यामुळे झाडे खूप म्हत्वाची आहेत.

२) पाण्याची बचत - पाणी स्वतःच न वापरता सांभाळून वापरले पाहिजे. कारण पाणी हे जीवन आहे.

३) कागदाचा योग्य प्रमाणात वापर - कागद कागद हा आपल्याला झाडांमुळेच प्राप्त होतो व तो कागद ठेवण्यासाठी कितीतरी झाडे तोडावी लागतात. जर आपण या सर्व उपाययोजनांचे पालन केले तर न आपण नक्कीच आपल्या पर्यावरणाची काळजी घेऊ शकतो. 'निस्सर्ग' ही माणसाला देवाने दिलेली एक देणगी आहे व

त्यामुळे पर्यावरण सुरक्षित ठेवणे हे माणसाचे कर्तव्य आहे.

शत्रुतंत्राच्या सहाय्याने निःसर्गावर विजय करून पाठणाच्या माणसाला मुक्त न राहू कीरीनासाशय्या पुका न दिवणाच्या विषाणू ने माणसाच्या जीवावर केलेला हल्ला हे निःसर्गाचे काही संकेत आहेत. माणसाने जागी होऊन आपले डोळे उघडून पर्यावरणाचे रक्षण करणे गरजेचे आहे.

मित्रांनो! संपत्ते पुक झाड तेव्हा, जेव्हा, तेव्हा कमी होत असतो तुमच्या व माझ्यातील पुक-पुक श्वास. त्यामुळे झाडे लावा व झाडे जगवा!
झाडे

Good

Ansalya
30/8/24

पोल्डर

Group c

नाम - वंशिका निलेश त्रिपाठी

कक्षा - आठवीं

विषय - हिंदी निबंध लेखन

पर्यावरण

मानव तूने अपनी ज़रूरतों के लिए,
पर्यावरण को कितना दूषित किया है,
फिर भी पर्यावरण ने तुझे सब कुछ दिया है।

प्रसन्नान प्रसन्नावना : 'पर्यावरण' इस शब्द का निर्माण दो शब्दों को मिलाकर हुआ है। परि + आवरण जिसमें परि का अर्थ है चारों ओर और आवरण का अर्थ है घिरा हुआ अर्थात् चारों ओर से घिरा हुआ। पर्यावरण प्रभु द्वारा की रक अनमोल रचना है।

प्रकृति और वातावरण : पहले मनुष्य अपना अधिकतर समय पर्यावरण के साथ बिताया करता था। परंतु आज की पीढ़ी वातावरण को इतना नहीं चाहती और उन्हें प्रदूषित कर रही है। वातावरण और मनुष्य रक-दूसरे पर निर्भर है। पर्यावरण अपने-आप में समाया हुआ है। वातावरण की हर रक चीज़ हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पेड़ हमें छाया और ऑक्सीजन देते हैं जहाँ फूल भजाने के काम आते हैं। हमारे लिए माती हमारी असली माँ है, जो हमें अन्न देती है।

पहला वातावरण दिवस : संयुक्त सरकार द्वारा ५ जून से १६ जून १९७२ में चर्चा हुई और ५ जून १९७२ से पूरा विश्व पर्यावरण दिवस मनाता है। इस दिन आम जनता से विद्यालय तक सभी को पर्यावरण स्वच्छ और सुंदर रखने को कहा जाता है।

वातावरण प्रदूषण! : मनुष्य वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। बहुत सारी मील और वाहनों के कारण धुआं फैल रहा है जिससे वायु प्रदूषित हो रहा है। इसी प्रकार जल प्रदूषण, माती प्रदूषण और वृक्ष प्रदूषण भी हो रहा है। 'वैश्विक तापमान' कुछ ज्यादा ही तेजी से बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि

वैश्विक तापमान 2050 तक इतना बढ़ जायेगा कि आने वाली पीढ़ियों को पीने का पानी भी नहीं मिलेगा। उनका मानना है कि लोगों को 'ओक्सिजन सिलेंडर' लेके घूमना पड़ सकता है। किंतु यदि मनुष्य अपनी इस गलती को समझकर वातावरण स्वच्छ और सुंदर रखेगा तो आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित रहेंगी। इसके सुधारण के लिए हमें सबसे पहले पानी में कचरा डालना बंद करना होगा और कूड़ेदान में ही कचरा डालना होगा। नदी - ताले सही समय पर साफ करवाना होगा। सबसे महत्वपूर्ण पेड़ों को काटकर इमारतें बनाना बंद करना होगा।

वृक्षारोपण : हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'वृक्षारोपण उपाय' घोषित किया है जिससे देश के सभी नागरिक रक वृक्ष लगाएं और वातावरण को सुधारने में सहायता करें। वृक्ष लगाने से 'वैश्विक तापमान' कम होगा और हमारी सृष्टि साफ और सुंदर होगी।
'पेड़ लगाओ, वातावरण बचाओ'

उपसंहार : प्रदूषण हानिकारक हो सकता है इसे रोकने के लिए हमें वातावरण को स्वच्छ करना होगा। वातावरण को दो भागों में बाँटा गया है। एक है मनुष्य द्वारा बनाया गया वातावरण और दूसरा है प्रभु द्वारा बनाया गया वातावरण। हमें फिर से एक बार प्रभु द्वारा बनाया हुआ वातावरण यानि स्वच्छ वातावरण रखना होगा। वृक्षारोपण करने के साथ इमारतें खड़ी करना कम होना चाहिए। हमें धरती माँ को बचाना होगा और आम जनता, युवक, बच्चों को यह समझाना होगा की वातावरण नहीं, तो तुम भी नहीं। नारे, अखबार और फोन द्वारा लोगों को सूचित करना होगा।

'वातावरण यदि नहीं रहेगा सुरक्षित,
हो जायेगा सबकुछ दूषित।
वातावरण बचाओ, पेड़ लगाओ,
आज यही समय की माँग है।'

Wastika
30/08/2024

30/8/24

Group C

Page No.
 Date

Name:- Maithili Maheshkumar Gyadi

Std - 10

Topic - Care for Creation

"Stewardship of the Earth"

- A call to protect and honour our planet

As Mahatma Gandhi once said,

"Earth provides enough to satisfy one's needs, but not one's greed."

These words remain true more than ever after realising the devastating effects of human activities on our environment.

Albert Einstein's profound words remind us that nature holds answers to all our questions and concerns. In this world of technology and urbanisation often overshadows our connection to the natural world, it is our responsibility that we take care of our nature.

Consider, for instance, Amazon rainforest which is often referred as 'lungs of the Earth'. This vast expanse of greenery not only helps us providing with oxygen but also regulates global climate and supports biodiversity. Unfortunately, deforestation has led to significant environmental damage, affecting not just only the rainforest but also our global climate. If we do not proper steps in order to protect these ecosystems, we risk our jeopardizing health of our world and our future generations.

Another example is, Great Barrier reef, a vital natural wonder of world and marine ecosystem. Climate change, pollution and overfishing had led to coral bleaching. A delicate balance is not only

source of beauty but also crucial for marine biodiversity and coastal protection. Our actions today - whether it is reducing the use of carbon emissions or supporting sustainable practices - will determine the future of the reef.

Closer to home, consider a simple act of planting trees. Trees provides us with oxygen, improves air quality and provides shelter to wildlife. By participating in tree plantation initiatives or even by tending to have own gardens, we contribute to healthier environment.

Our responsibility to nature extends beyond grand gestures. Caring for creation is a fundamental aspect as steward of the Earth. It's about recognising the intricate web of life that binds us to the natural world and take deliberate actions in order to preserve our resources, beauty and wonders for our future generations. It depends on our choices - opting for reusable products, reducing wastes, conserving water and supporting environmentally friendly practices. Each actions when multiplied among millions of people will definitely lead to significant positive change.

In conclusion, caring for nature is not merely a duty but a privilege. It is a commitment to safeguard our planet's beauty and resources for ourselves and our future generation. As Einstein suggested, "Let's look deep into nature, understand it's significance and act with responsibility and reverence."

Kavish
30/8/24

NAME: MANASI ANIL RANE

STD: 11th (Group D)

DATE: 30/8/24

COMPETITION: ESSAY WRITING (MARATHI)

TOPIC: CARE FOR CREATION (निसर्गाची काळजी)

निसर्गाची काळजी (पर्यावरण)

पर्यावरण म्हणजे सर्व सजीवांच्या जीवनावर परिणाम करणारी भोवतालची परिस्थिती. निसर्ग ही ईश्वराने निर्माण केलेली अद्भूत गोष्ट आहे. निसर्गामध्ये निसर्गतः अस्तित्वात असणाऱ्या घटकांचा वापर आपण व इतर सजीव आपल्या पालन-पोषणाकरिता करीत असतो.

“पर्यावरण देतो ऑक्सिजन आपल्याला,
स्वच्छ निर्मळ जीवन जगायला.”

पृथ्वीवर असणाऱ्या प्रत्येक घटकाचा मानवी जीवनावर प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्षरित्या परिणाम होतो. मानवाने आपले जीवन समृद्ध करण्यासाठी उपलब्ध नैसर्गिक साधनांचा वापर करून नैसर्गिक पर्यावरणात अनेक बदल केले. आपल्या अवती-भवती असणाऱ्या समृद्ध निसर्गाचे आहे. ईश्वराने निसर्गाची निर्मिती केली, आपण जे पाणी पितो, ज्या सूर्यप्रकाशात शहते, पक्ष्यांची किलबिलाट श्रुतते. त्यात असणारे सजीव आणि निर्जीव या दोन्ही गोष्टींचा समावेश आहे.

(अतिपरिच्यात अवज्ञा होते) अशी शोरमोठ्यांची शिकवण आहे. त्याची प्रचिती आपण निसर्गाशी जी वागणूक करतो त्यातून येते. हा निसर्ग माणसाला मिळालेला अमूल्य ठेवा आहे. हे माणसाच्या लक्षातच येत नाही. निसर्गाच्या ठेत्यात विविध वृक्ष येतात. हे वृक्ष विविध प्रकारची फळे माणसाला देतात. आपल्या सुखाचे आसमंत सुगंधित करणारी विविध प्रकारची फुले वृक्ष माणसाला देतात.

श्रवतेच नाही तर माणसाच्या आजारांवर हसखास शक्यबाण ठरणारी औषधे ही वृक्ष माणसाला देतो, असे

आयुर्वेद सांगतो. (गुमी) ही माणसाला आधार देते म्हणूनच तिला (धारणी) असे म्हणतात. हीच 'भ्रमान' माणसाचे सोबे अपशक्त सहन करते. तर ती (अमना) ठरते. पण धरती माणसासाठी कितीतरी अमूल्य गोष्टी आपल्या उदरात सांभाळते. धरतीच्या उदरात कोळसा असतो.

इतर खनिजे ती माणसाला देते. मॉल्यवान रत्ने माणिकेही ती माणसाला देते. चांदी, सोने यांच्या मॉल्यवान धातूनी ती माणसाला सजवले आहे. धरतीच्या उदरातील सोबे धातू माणूस आपल्यासाठी वापरत असतो. कधी सागराजवळील मॉल्यवान रत्ने माणसाला देऊन तो आपले (रत्नाकर) हे नाव सार्थ ठरवतो. सागरासाठी मिळणारे (इंधन) माणसाला आज मॉल्यवान रत्नांपेक्षाही मॉल्यवान वाटते. अशा अनेक प्रकारे निसर्ग हा माणसावर आपली संपत्ती उदळत असतो. माणसाला आपले उदरे दोन हात ही अपुरे पडतात ही संपत्ती लुटायला पृथ्वीवशा दिवसेंदिवस होणारा -हास व त्याच्या सृष्टी व मानवी जीवनावर होणारे दुष्परिणाम हा अत्यंत चिंतेचा विषय आहे. आज निसर्गात पर्यावरणात अनेक बदल होत आहे. कारण या बदलांमध्ये मानवनिर्मित बदल कारणीभूत पर्यावरणाच्या -हासास कारणीभूत आहेत. म्हणूनच (पर्यावरण संवर्धन) ही काळाची गरज आहे.

पर्यावरणाला प्रदूषण आणि शोषण पासून वाचवणाऱ्या प्रक्रियेला (पर्यावरण संवर्धन) असे म्हटले जाते. पृथ्वीवर असलेला निसर्गच आपले भाविष्ठ आहे. त्याच्या संरक्षणासाठी वेळीच लक्ष द्यावे लागेल. पर्यावरणाचे महत्त्व समजून जगभरातील देश वृक्षलागवड व जास्तीतजास्त सीमनजी गॅसचा उपयोग करायला लागले आहेत.

पर्यावरणाला प्रदूषण मुक्त करण्यासाठी सर्वात आधी जल प्रदूषणावर रोख घातली पाहिजे. कारखान्यांचे खराब पाणी, धरातील दूषित पाणी,

नाल्यामधून वाहणारा मल इत्यादी समुद्रात जाण्यापासून रोखले गेले पाहिजे.

जलप्रदूषणानंतर वायु प्रदूषणाने पर्यावरणाला हानि पोहोचवली आहे. मोठमोठ्या कारखान्यांमधून वाद निघणारे धूर, रेल्वे व इतर पेट्रोल, डिझेलवर चालणाऱ्या वाहनांमधून निघणारा धूर वायु मंडळात मिशळून त्याला दूषित करत असतो.

जगभरात (५ जून) पर्यावरण दिवस म्हणून साजरा केला जातो. या दिवशी संपूर्ण विश्वात पर्यावरण संवर्धनाचे महत्त्व सांगणारे सेमिनार आयोजित केले जातात. या दिवशी वृक्षलागवड यांचे कार्यक्रम देखील आयोजित केले जातात. अशा विविध प्रकारे आपण पर्यावरण संरक्षणासाठी संपूर्ण मानव जातीला सहायता करू शकता.

“माणसा आता तरी जागा होशील का?

हाक तरी झाड लावशील का? आता वाढत्या

पाहिजेत वृक्ष-वेली संत तुकारामांच्या

अभंगातील फुलतील वृक्षवल्ली, वने येतील,

पक्षी गातील मंजुळ बाणी, चरचरातून

फुटतील झरे, दयाखोऱ्यातून खळखळेल

पाणी...!”

V Good

(Sonsalek)
30/8/24

Name: Sonali Manoj Jha - Group D

Std: XII

Topic: शांति

शांति

शांति एक ऐसा शब्द जो न केवल व्यक्तियों के बीच के संबंधों को दर्शाता है, बल्कि समाज और राष्ट्रों के बीच के सामंजस्य को भी दर्शाता है। कहा जाता है कि 'शांति नितान्त आवश्यक' अर्थात् शांति परम आवश्यक है। शांति की तलाश इंसान की एक पुरानी चाहत रही है। इसका अर्थ केवल युद्ध और संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है, लेकिन एक ऐसी स्थिति है जिससे सभी लोगों को न्याय, समानता और सम्मान प्राप्त हो। शांति वह मार्ग है जो हमें सही मार्ग तथा दिशा दिखाता है।

जैसा कि मार्टिन लुथर किंग ने कहा है "सच्ची शांति केवल तनाव की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि न्याय की उपस्थिति है।" भारत देश में कहा कहा जाता है कि 'बेटियाँ शत्रुत्व का रूप होती हैं, और बेटे बचाओ, बेटे पढ़ाओ' के नारे भी लगते हैं लेकिन बलात्कार जैसे अपराध न्याय की कमी के कारण बढ़ते जा रहे हैं। पीड़िता और समाज के अन्य लोगों को न्याय के बिना मानसिक शांति नहीं प्राप्त हो सकता। हमारा भारत देश सदियों से दुनिया को शांति और सहिष्णुता का संदेश देता आ रहा है। शांति हमारे भारत देश की विरासत है। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम कभी शांति के चपेट में नहीं आए। हम माणिकपुर में हुए दंगों को तथा बालासोर में हुई ट्रेन घटनाओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते। हम इस बात को नजरअंदाज नहीं कर सकते कि कई ऐसे लोग भी हैं दुनिया में समय-समय पर इस साधारण जनमानस की शांति को अपने स्वार्थ के लिए नष्ट करते आ रहे हैं। हम जानते हैं कि रूस और यूक्रेन के बीच लड़ाकाम एक वर्षों से युद्ध चल रहा है। और इस विनाशकारी युद्ध में कितने बच्चे,

कितनी महिलाएँ तथा कितने निर्दोष लोगों की जान गई। विश्व गोल खड़ा देखा रहा। जब तक खुद के घर में लड़ाई नहीं होती, हर कोई दूर से गोल पशु बना रहता है। भारत का स्वैश हर युद्ध के प्रति शांतिप्रिय रहा है।

"सत्ता की दौड़ में, बूल गए सब प्यार, आतंक की आंधी, ठर का है व्यापार। शांति की राह खोजे, मिलकर सब संसार, अहिंसा का हो ध्वज, शांति हो अपार।"

आज की आगपोंड भारी जिंदगी में, लोग मानसिक तनाव, चिंता और अभाव से जूझ रहे हैं। आंतरिक शांति का अभाव हमारे स्वास्थ्य पर भी प्रकट हो रहा है। योग, ध्यान और अध्यात्म से मानसिक शांति प्राप्त हो सकती है। कहा जाता है, "जहाँ सत्य, अहिंसा और धर्म का पग-पग लगाता डेरा, वही भारत देश है मेरा।" लेकिन धार्मिक संघर्ष और सांस्कृतिक टकराव भी शांति के दिशा में बड़ी बाधाएँ हैं। धर्म का अर्थ शांति, प्रेम और मानवता है, लेकिन इसका दुरुपयोग अगर जफरत फैलाने के लिए किया जाए तो यह विनाशकारी साबित हो सकता है। डॉ. र. पी. जे अब्दुल कलाम ने कहा था "शिक्षा सबसे शक्तिशाली दायिया है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।" शिक्षा के माध्यम से हम समाज में जागरूकता फैला सकते हैं तथा समाज को शांतिप्रिय बना सकते हैं। मिडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। मिडिया का काम सही, निष्पक्ष जानकारी देना है और जिससे समाज में जागरूकता फैले। लेकिन अगर मिडिया का इस्तेमाल जफरत और अफवाह फैलाने के लिए किया गया तो यह हानिकारक हो सकता है। "पर्यावरण से है जीवन, इसे अपना दोस्त बनाते हैं, चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं।" पर्यावरण प्रदूषण भी कहीं न

वाही अशांति का कारण है, जोशा कि कति
हरिवंश राय बच्चन ने कहा है "स्वर्ग न हो
नर्क का द्वार, यदि न हो शांति का विस्तार।"

शांति की स्थापना केवल सरकारों या
संस्थानों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हम सबकी
जिम्मेदारी है। व्यक्तिगत स्तर से लेकर वैश्विक
स्तर तक शांति बनाए रखने के लिए प्रयास
करने चाहिए। शांति से ही देश तथा विश्व का
विकास हो सकेगा। अंततः एक सवाल के साथ
अपने कलम को विश्राम देना चाहती हूँ :

"कई चाहते, कई खादिशे, कई दरसरो का
दिसाब रखते हैं,

हम इंसान अपने दिल में, तकलीफें तमास रखते हैं।
अपने मन की खुशी के खातिर अनगिनत काम
करते हैं,

पर एक सवाल है मुझे आपसे पूछना
क्या आप दूसरों की शांति का भी इतना ही
खयाल रखते हैं ?"

~~Refacts~~
23/08/2024

NAME: PRISHA V. SHETTY

STD: XII GROUP: D

TOPIC: CARE FOR CREATION (ENVIRONMENT)

CARE FOR CREATION (ENVIRONMENT)

"The earth has enough for everyone's need,
not for everyone's greed."

- MAHATMA GANDHI

And rightly so, nature provides us with food to eat, water to drink, and wood to build our houses. But how are we paying it back? As all we know, man with his desire to build and improve the lifestyle for himself has ignorantly created an **ecological imbalance**. We are doing everything to satisfy our greed without thinking twice about the consequences of our actions. Cutting trees, polluting the environment, hunting and poaching has affected the environment in such a way that in **few years time, all our natural species would be extinct**.

The great physicist **Albert Einstein** has once quoted, "Look deep into the nature and you will understand everything better." But when I look around, all I can see is an **infrastructural marvel**: beautiful roads, developed railways, high-end buildings, modern irrigation facilities, factories etc. Our government is investing crores of rupees in social infrastructure which majorly contributes to the growth of economy in the nation. The construction of buildings and advancements in technology have apparently improved the lifestyle and comfort of man. But have we ever stopped to think about the **negative repercussions** it could have on the

future generation by calculating the long term effects?

There is a famous proverb which goes like this, "Change is coming, whether you like it or not." And rightly so, the present day scenario of environmental problem is a change which we all oppose and yet it is us who are responsible for it. Entire ecosystems are collapsing. We are on the beginning of mass extinction and all we can talk about is money and fairytales of eternal economic growth!

No one realises the ill-effects of this seemingly unstoppable race towards modernization. Day-by-day we become prouder of the technology that we have achieved, but have we ever wondered how sad and disappointed our Mother Earth would be, that her own children are destroying her for their selfish needs despite of providing us everything that she ever had? Why are we so keen on shredding every last piece of humanity that is left within us? Why can't we be considerate to the nature, who is ready to sacrifice everything to keep us happy?

Imagine a life without water and an extremely poisonous air to breathe! We certainly don't want to give such a dangerous living to our children. Hence,

it is high time, we become more cautious and responsible. And how can that be done? We must try to **reduce pollution** as much as we can. Using public vehicles instead of private, not discarding plastic waste into the soil which furthermore causes soil pollution, reduction of unnecessary honking, switching to CND CNG and LPG/LPG vehicles etc. are some of the ways that we can **control the environmental problems** caused by us.

We all know that changing the course of environmental problems is not easy, but the **tools are in our hands** if we apply them before it is too late. We need to realise that, **we were born to help the world grow, not to destroy it.** Hence, as the citizen of our planet, it is time to declare, no more talk, no more excuses, as **John. F. Kennedy** put it very aptly, "Our problems are manmade and therefore they must be solved by man."

Kausar
30/8/24

Name :- Taie Sachin Bhoir

Std :- 12th Cont. Topic = Care for Creation

Page No.
 Date

Group :- D

शुष्कीची काळजी - हाक चिंतन

" शुष्कीची काळजी घेते निसर्गाची रक्षा करतो "

शुष्की.... शुष्की म्हणजे आपल्या जिवणाचा आधार. आपल्या निसर्गातील प्रत्येक घटक म्हणजे हाक अनमोल दान आहे. त्यामध्ये वृक्ष, पाणी, वायू यांचा समावेश आहे. प्रत्येकाने आपल्या निसर्गाचा संरक्षण करणे ही केवळ नैतिक जबाबदारीच नाही तर ते मनुष्य जी ह्याने हाक निसर्गा व समृद्ध भविष्यचे वचन आहे.

शुष्कीच्या काळजीसाठी आपल्याला विविध उपाय अवगंभावे त्यागतात त्यामध्ये झाडांची त्यागवड करणे, पाणी वाचवणे, वायू शुद्ध शुद्ध करणे यांचा समावेश आहे. झाडे केवळ वायू शुद्ध करत नाही तर ते निसर्गातील सौंदर्य वाढवतात. आणि वणुकीवांटा असून आश्रय देतात. तसेच, पाण्याचे स्रोत म्हणजे जिवणाचे मुळ. पाण्याचे अपत्यय टाळून त्यांचे संरक्षण करणे आवश्यक आहे.

असे म्हणले जाते की, शुष्की मध्ये बनलेली प्रत्येक वस्तु, शुष्कीची आणि मनुष्याची काळजी घेण्यासाठी आहे.

शुष्कीसाठी केलेल्या मेहनतीच्या दृष्टीने आपल्या जीवने मध्ये बन आणणे आवश्यक आहे. उदा. हाकण इत्यादी वाढ आणि त्याची माहिती असणे त्यामुळे आपल्या निसर्गातील सौंदर्य वाढते असेच आपण हाक नवा स पर्यावरण शुष्कीने तयार करू शकतो.

तसेच शुष्कीची काळजी घेणे म्हणजे आपल्या जिवांची काळजी घेणे. "आहे शुष्की मनुष्याची गाथा" हे गाणे आपल्याला

जानीव करून हेते की जसे आपण शरतीना शंभानता तसेच शरती आपल्याला प्रत्येक वेळी अनंद हेते.

तसेच, शरतीच्या सुंदरतेचे व महत्वाचे मुल जन्मुन त्याचे संरक्षण करणे आवश्यक आहे. पृथ्वीवरचे प्रत्येक झाड, प्रत्येक पाणी आणि "प्रत्येक जनाचे जीवन आहे" हे शाणे आपल्या जानीव करून हेतात की शरतीचे संरक्षण करणे शुभ आवश्क आहे.

शरती आपल्या जीवणासाठी एक महत्वाचा भाग आहे. त्यामध्ये पाणी, झाड, पाणी, वायु आणि माती हे शरतीचे अन्मे अनमोल घटक आहेत त्यांचे रक्षा आणि संरक्षण करणे हे आपली जबाबदारी आहे. हीच गोष्ट आपण एका गोष्टीच्या माध्यमातुन एका सोप्या भाषेत बघुया

डेगशजवन एक छोटसा गाव होता. त्या गावात एक राम नावाचा मुलगा राहत असे. त्याचा निसर्गाची शुभ आवड असे. त्याच्या दशसमोर एक बाग होते. तो लिकडे प्रत्येक साकाराळी जात असे आणि झाडांना पाणी घ्यास घ्यात असे. त्याचे बाबा त्याला म्हणत, तु झाडांना पाणी देऊन पर्यावरणाचे संरक्षण करत आहेस.

एकदा त्याला एका बागे मध्ये जाण्याची संधी मिळाली. तिथले वातावर शुभ शुभ ज्ञाने होते. पाणी पण कमी होता. पर्यावरणाची ही अवस्था बघुण समत्या दुःख झाले.

त्याने ठरवले की शाकातय एक नवा पर्यावरणीय प्रकल्प सुरू करावा. त्यामध्ये झाडांची वाढही होईल. पाणी देखील स्वच्छ राहील. पर्यावरण सुद्धा सुंदर होईल. त्याने त्याच्या आई वडीलांच्या

महतीने व गावकरांच्या महतीने हा प्रकल्प सुरू करण्याचे ठरवले. "आडे वाचवा जीवण वाचवा" या मंत्रा खाली त्याने हा प्रकल्प सुरू केला.

ही गोष्ट आजुबाजुच्या परीक्षेत व गावात पसरली. सर्व गावकरांनी मीळुण शम ला साथ हीली असून आणि सर्वांनी हजेरी आडे लावली. शमच्या गोष्टीतून आपल्याला अनुभवायला मिळते की "हाकला काहीच करू शकत नाही पण जर साथ मिळाली तर काहीच अशक्य नाही. असेच सर्वांनी आपले छोटे से थोडादान दिले तर काही अशक्य नाही. आपले छोटेसे प्रयत्न एक मोठा बदल घडवू शकतो.

"सर्व मिळुण शपत घेऊ घेऊया
पुण्या स्वच्छ आणि सुंदर बनवूया!"

Ansaries
30/8/24

Name : DORRIS UMESH KANVAL
Std : XI Group : D
Topic : Peace

• The Role of Education in promoting Peace •

In a world plagued by conflict, inequality and social justice, education stands as a beacon of hope for a brighter future. As the most potent tool of transformation, education plays a vital role in promoting peace by cultivating understanding, tolerance and empathy among individuals and communities.

Through education we can confront the root causes of conflict, ignorance, prejudice and inequality; and nurture a culture of peace. Critical thinking, problem solving and communication skills are empowered through education. However, education also promotes cultural awareness, understanding and appreciation, shattering stereotypes and biases that often fuel a conflict.

Through education we can change an individual to an active citizen by engaging in communities and championing social justice. Addressing pressing issues like poverty, inequality and human rights; education can help create a more just and peaceful

society. Furthermore, education bridges the gap between diverse communities, fostering global understanding and cooperation. If we learn to respect each other's perspective, traditions and values, then we humans can too build bridges of understanding and peace.

Education helps increase the knowledge of an individual, which also helps in being an more open-minded and not believing in superstitious facts. Through education, we know the basic functions of our society, and communities. Education has broken down the barriers of narrow-minded people and has introduced to us the serenity of today's modern generation.

Information regarding any subjects including science, health, astronomy has been portrayed to us through education. The man's known as a ancestors journey, their peaceful way of living has set us an example of righteous peace in today's problematic and war-filled world.

Through education we know the different practices of our peaceful culture and diversity around the world. The message of peace, non-violence and social justice is put out through education by educating the fellow

citizens of their mis-leading towards life and society.

In conclusion, education is the cornerstone of peace. By fostering understanding, tolerance and empathy we can stop the root causes of conflict and create a more just and peaceful world. As we strive for a brighter future, let us help the society in the transformative power of education where the practice of tolerance, equality and justice prevail to make our earth a better place for living.

"Education is the most powerful weapon you can use to change the world"

- Nelson Mandela

Kousar
30/5/24